ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-1* April- 2017
Anthology : The Research

हिंदी गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

सुमन वर्मा
व्याख्याता,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, धौलपुर
राजस्थान, भारत

Abstract

जिस समय भारतवर्ष में हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माण का प्रारम्भ हुआ, लगभग उसी समय अर्थात उसी समय के आस पास भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम सीमान्त से विजयदृप्त इस्लाम ने प्रवेश किया।' ये वह समय था जब हिन्दी साहित्य जगत में भाषा, विचार, दर्शन आदि के माध्यम से सक्रिय परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। इससे पूर्व शास्त्र और पांडित्य ने 'साहित्य' को वशीभूत कर रखा था, परंतु अब साहित्य लोक की ओर उन्मुख हुआ। महत् परम्पराओं का लोकभाषा में समाहित होना एवं परिवर्तित होना, लघु परम्पराओं का साहित्य रचना के माध्यम से प्रतिष्ठित और स्थापित होना, बौद्ध, जैन और ब्राह्म विचार और दर्शन आदि का पुरानी हिन्दी में अभिव्यक्त होना और देशकाल के सन्दर्भ में विकसित और रूपान्तरित होना उस समय के उभरते साहित्यिक प्रतिमान थे।

हिन्दी साहित्य को आदिकाल से ही एक प्रौढ और पुष्ट लोक-साहित्य एवं शिष्ट साहित्य माना गया है। वर्तमान तक अनेकों परिवर्तनों के होने के बाबजूद भी हिंदी साहित्य आज भी विशिष्टता प्राप्त किये हुए है। हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा जैसे- गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास और समालोचना आदि अपने आप में विशिष्ट हैं जिनके कारण हिंदी साहित्य भी वैश्विक स्तर पर विशिष्ट साहित्य है।

प्रस्तुत गुणात्मक शोध अध्ययन के अंतर्गत हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं एवं विधाओं जैसे- गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास और समालोचना आदि का परिचय प्रस्तुत किया गया है और साथ ही महत्वपूर्ण पहलुओं की समीक्षा की गयी है।

मुख्य शब्दः हिंदी, साहित्य, विधा, गद्य, पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, भाषा, इतिहास, आदिकाल।

प्रस्तावना

हिंदी गद्य के आरंभ के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है। हिन्दी गद्य के विकास को विभिन्न सोपानों में विभक्त किया जा सकता है-

1. पूर्व भारतेंदु युग (प्राचीन युग): 13 वीं शताब्दी से 1868 ईस्वी तक.
2. भारतेंदु युग (नवजागरण काल): 1850 ईस्वी से 1900 ईस्वी तक.
3. द्विवेदी युग: 1900 ईस्वी से 1922 ईस्वी तक.
4. शुक्ल युग (छायावादी युग): 1922 ईस्वी से 1938 ईस्वी तक.
5. शुक्लोत्तर युग (छायावादोत्तर युग): 1938 ईस्वी से 1947 तक.
6. स्वातंत्र्योत्तर युग: 1947 ईस्वी से अब तक।

हिंदी साहित्य अत्यधिक व्यापक है जिसको इसकी विभिन्न विधाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। विधा का अर्थ यदि लेखन शैली से है। साहित्य रचना की दो विधाएं हैं- गद्य और पद्य। गद्य विधा के तहत कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, आत्मकथा, पत्र वगैरह लिखे जाते हैं। वहीं पद्य के अंतर्गत कविता, गीत, गाना, मुक्तक आदि लिखा जाता है। पद्य की अपेक्षा गद्य समझने में सरल है । प्रेमचंदकी रची हुई कहानियाँ, उपन्यास, सीधी और सरल भाषा में हैं जिन्हें पढने के लिए किसी प्रकार के विशेष ज्ञान की आवश्यकता नहीं है । साधारण साक्षर इंसान उन्हें आसानी से पढ सकता है, समझ सकता है, आनंद उठा सकता, प्रेणा ले सकता है। हिंदी गद्य साहित्य की निम्नलिखित महत्वपूर्ण विधाऐं हैं-

नाटक

नाटक 'नट' शब्द से निर्मित है जिसका आशय है-सात्विक भावों का अभिनय। हिन्दी में नाटक लिखने का प्रारम्भ पद्य के द्वारा हुआ लेकिन आज के नाटकों में गद्य की

प्रमुखता है। नाटक गद्य का वह कथात्मक रूप है जिसे अभिनय, संगीत, नृत्य, संवाद आदि के माध्यम से रंगमंच पर अभिनीत किया जा सकता है। नाटक के प्रमुख तत्त्व हैं- कथावस्तु, पात्र व चरित्र-चित्रण, संवाद या कथोपकथन, भाषा-शैली, देशकाल और वातावरण, उद्देश्य, संकलनत्रय।

उपन्यास

उपन्यास गद्य साहित्य की वह विधा है कि जिसमें मानव जीवन का विस्तृत रूप कथात्मक गद्य में रोचक प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही इसमें युगीन प्रवृत्तियाँ इस प्रकार चित्रित की जाती हैं कि मनुष्य को कुछ दिशा-निर्देश मिल सके। उपन्यास के प्रमुख तत्त्व हैं- कथानक, पात्र व चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल तथा वातावरण, भाषा-शैली उद्देश्य।

एकांकी

एक अंक वाले नाटक को एकांकी कहा जाता है। आकार में छोटा होने के कारण इसमें जीवन का खण्ड चित्र प्रस्तुत होता है। नाटक के समान इसके भी छः तत्त्व होते हैं। इसमें पात्रों की संख्या एवं घटनाएँ भी कम होती हैं। एकांकी अनेक प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं एकांकी के विविध प्रकार हैं- सामाजिक एकांकी, पौराणिक एकांकी, ऐतिहासिक एकांकी, राजनीति से सम्बन्धित एकांकी, चरित्र प्रधान एकांकी, तथ्यपूर्ण एकांकी।

कहानी

कहानी गद्य साहित्य की सबसे लोकप्रिय मनोरंजक विधा है। कहानी साहित्य की वह गद्य रचना है जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना प्रधान हृदयस्पर्शी एवं सुरुचिपूर्ण कथात्मक वर्णन होता है।

लघु कथा

लघुकथा कहानी लेखन का सबसे छोटा पर कठिन रूप है। कहानी लेखन के इस नवीनतम रूप में मूल भाव को कुछ पंक्तियों या संवादों में ही पाठकों को समझा कर कहानी को ख़त्म करना होता है। आधुनिक हिंदी लघुकथा का विकास 1900 से 1920 तक, द्विवेदी जी के निर्देशन में, सरस्वती में हुआ। द्विवेदी ने लघु कथा साहित्य के प्रति अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया; हालाँकि, हिंदी में आधुनिक शैली की शुरुआत करने वाली पत्रिका के संपादक के रूप में, उन्होंने इसके विकास पर बहुत नियंत्रण रखा। शेक्सपियर, पो और वर्ने से लेकर श्रीहर्ष और टैगोर तक, प्रेरणा लेते हुए, हिंदी में लघु कथाकारों ने साहसिक-रोमांस, विज्ञान कथा, डरावनी और ऐतिहासिक कथाओं के साथ प्रयोग किया, लेकिन अंततः उन विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जो भाषा, साहित्य और राष्ट्र के लिए अधिक महत्वपूर्ण थे।

निबंध

गद्य की उस रचना को निबन्ध कहते हैं जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को सीमित सजीव, स्वच्छन्द, सुव्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करता है। हिन्दी निबन्धों का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। निबन्ध के प्रमुख प्रकार हैं- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक, आलोचनात्मक, व्यंग्यात्मक, अलंकारिक निबन्ध।

रेखाचित्र और संस्मरण

खुद के या किसी जानकार के जीवन से सम्बन्धित यादों को व्यवस्थित रूप से लिखने पर संस्मरण बनते हैं।

जीवनी

प्रसिद्ध लोगों के जीवन के बारे में जानने की उत्सुकता तो हर किसी में होती है। उसी उत्सुकता को शांत करने के लिए जीवनियाँ लिखी जाती हैं।

आत्मकथा

आत्मकथा, यानी स्वयं की कथा। अन्य शब्दों में, जब किसी व्यक्ति द्वारा अपने जीवन की घटनाओं की सच्ची अभिव्यक्ति की जाती है तो इसको आत्मकथा कहते हैं। जीवनी आत्मकथा से भिन्न है क्योंकि जीवनी किसी भी व्यक्ति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के जीवन की घटनाओं का लेखन है।

यात्रावृत्त

यात्राओं को यादगार बनाने हेतु और यात्राओं के खट्टे-मीठे अनुभवों को लेखनी के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाना बहुत पहले से चला आ रहा है। दिन-प्रतिदिन यह विधा लोगों में बहुत अधिक लोकप्रिय हो रही है। यात्रा वृत्तान्त सत्य घटनाएँ होती हैं और पाठकों के लिए जानकारीप्रद या मनोरंजक कथाओं की तरह काम करती हैं।

पत्र

पत्र लेखन लिखित संवाद की एक अनौपचारिक विधा है। इसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या संस्था को लेखन के माध्यम के अपने विचार, किसी विषय या फिर हो रही घटनाओं से अवगत करता है। चूँकि यह संवाद का एक तरीका है, लेखन शैली व्यक्ति-प्रति-व्यक्ति बदलती रहती है। यह सच है की व्यक्तिगत पत्र लेखन का चलन वर्तमान में कम है, परंतु कंप्यूटर से पहले तक पत्र लेखन चरम पर था। पत्र के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत भावनाओं को प्रकट किया जाता था, वल्कि आधिकारिक कार्य हेतु भी इसका प्रयोग किया जाता था।

रिपोर्ताज

किसी घटना के यथातथ्य वर्णन को रिपोर्ट कहते हैं जो प्रायः समाचार पत्रों के लिए लिखे जाते हैं। हिंदी गद्य की विधा 'रिपोर्ताज' रिपोर्ट का साहित्यिक रूप है। अन्य शब्दों में, साहित्यिक दृष्टि से समाचार पत्रों हेतु लिखे जाने वाले तथ्यात्मक वर्णन और समाचार रिपोर्ताज कहलाते हैं।

व्यंग्य

व्यंग्य का सबसे छोटा रूप चुटकुला है, जिसमें कुछ पंक्तियों या संवाद के माध्यम से मजाक किया जाता है। बड़े व्यंग्य लेखों या कहानियों की तरह होते हैं, जिसमें विभिन्न संवादों, पात्रों और बातों के जरिए किसी गंभीर, सामाजिक या सामयिक मुद्दे पर कटाक्ष किया जाता है।

इतिहास

इतिहास का अर्थ है किसी घटनाक्रम की ज्यों-की-त्यों अभिव्यक्ति। इतिहास में घटनाओं को उनके घटित होने का

दिनाँक, समय, आदि के साथ लिखा जाता है, जिससे भविष्य में उनका प्रयोग किया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

1. हिंदी गद्य साहित्य पर प्रकाश डालना।
2. हिंदी गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं का उल्लेख करना।
3. हिंदी गद्य साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालना।
4. वर्तमान में गद्य साहित्य की विधाओं की प्रासंगिकता बताना।

प्राक्कल्पना

1. गद्य और पद्य हिंदी साहित्य की दो प्रमुख विधाऐं हैं।
2. गद्य साहित्य की विधाऐं पद्य साहित्य की विधाओं की तुलना में समझने में अपेक्षाकृत अधिक आसान होती हैं।
3. हिंदी गद्य साहित्य की अनेकों महत्वपूर्ण विधाऐं हैं।
4. हिंदी गद्य साहित्य की प्रत्येक विधा वर्तमान में प्रासंगिक है।

साहित्य पुनरावलोकन

फ्रांसेस्का ओरसिनी (1996) ने अपने शोध प्रबंध 'दि हिंदी पब्लिक स्फीयर: 1920-1940' के अंतर्गत संदर्भित दो दशकों की अवधि में हिंदी गद्य के विकास पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि '1920 और 1930 के दशक हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन और विस्तार के दशक थे। इस काल में हिंदी मुद्रण, शिक्षा और राजनीति में एक स्थापित जनभाषा का निर्माण हुआ और जिसने भारत की भावी राष्ट्रभाषा बनने के लिए सतत सफलतापूर्वक संघर्ष किया। उक्त दशकों के दौरान सर्व प्रथम हिंदी साहित्य के लिए एक बाज़ार तैयार किया गया, पत्रिकाओं ने बहस और साहित्यिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ व्यावसायिक रोजगार के क्षेत्र में योगदान दिया, अनेकों दिशाओं में शैलियों की खोज की गई, और नई आवाज़ें उभरीं, जिनमें विशेष रूप से महिला लेखकों की सदियों से दबी हुई आवाजें थीं'।[1]

इरा शर्मा (2002) अपनी पुस्तक 'दि लघुकथा: ए हिस्टोरिकल एंड लिटरेरी एनालिसिस ऑफ़ ए मॉडर्न हिंदी प्रोज जेन्र' के अंतर्गत स्पष्ट करती हैं कि 'लघुकथा एक समकालीन हिंदी गद्य शैली है जो लगभग 1970 से मुख्य रूप से पत्रकारिता प्रिंट मीडिया में प्रकाशित हुई है। यद्यपि कट्टरपंथी संक्षिप्तता और लेखक की सामाजिक-राजनीतिक विषयों में रुचि लघुकथा की विशेषता है, परंतु लघुकथा के क्षेत्र में योगदान करने वाले लेखकों की बड़ी संख्या के कारण - विभिन्न विषयगत, औपचारिक और शैलीगत विविधताओं की प्रचुरता आधुनिक लघुकथाओं में दृष्टिगोचर होती है। प्रत्येक लघुकथा आकार में छोटी होती है जिसका उद्देश्य कम से कम शब्दों और पात्र संरचना की सहायता से किसी रोचक विषय को घटनाओं के साथ प्रस्तुत कर पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करना है'।[2]

गुज़ेल स्ट्रेलकोवा (2011), अपने शोध अध्ययन 'अननोवेबल और कम्प्रेहेंसिबल- टू एटिट्यूड्स टु लाइफ एंड डेथ इन मॉडर्न हिंदी प्रोज' ने लिखा है कि 'कृष्णा सोबती की रचनाऐं हिंदी गद्य का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिनमें उनके ईश्वर, सत्य, मृत्यु आदि संबंधी विचारों की अभिव्यक्ति को आसानी से देखा जा सकता है'।[3]

श्रीमती गायत्री औदिच्य (2015) ने अपने शोध प्रबंध ' हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा-साहित्य: समीक्षात्मक आकलन' के अंतर्गत आत्मकथा लेखन पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि 'आत्मकथा लिखना कोई आसान कार्य नहीं है, वल्कि यह गर्म रेत पर नंगे पैर चलने के समान है एवं अँधेरे के खिलाफ लड़ने जैसा है। आत्मकथा जीवन संघर्ष से उपजी एक संश्लिष्ट विधा है। आत्मकथा लेखन अब जीवन के इतिहास का कलात्मक प्रस्तुतीकरण मात्र नहीं है, अपितु विचारधारा की अभिव्यक्ति समाज परिवर्तन की दिक सूचक है। जिंदगी की गहराइयों से निकली और बेजोड़ शिल्प से बनी हुई सच्ची कथा ही आत्मकथा है'।[4]

शोधपद्धति

पत्र-पत्रिकाओं, शोध-प्रबंधों, शोध-अध्ययनों और शोध आलेखों एवं शोधपत्रों में प्रकाशित तथा साथ ही इंटरनेट की विभिन्न साइटों पर उपलब्ध द्वितीयक तथ्यों पर आधारित प्रस्तुत शोधपत्र गुणात्मक शोध की श्रेणी में आता है। इस शोध अध्ययन हेतु आगम विधि का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

साहित्य समाज का दर्पण है क्योंकि साहित्य समाज की प्रमुख प्रवृत्तियों को विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रतिबिंबित करता है। यह बात भारतीय समाज पर भी लागू होती है जिसका प्रतिबिम्बिकारन हिंदी साहित्य के द्वारा लम्बे समय से किया जा रहा है और जिसका अध्ययन भारतीय समाज का पर्याप्त ज्ञान करवाने में सहायक है। आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य पर्याप्त समृद्ध है जो अपनी अनेकों विधाओं के माध्यम से निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। इन विधाओं के अंतर्गत जिन जीवनीपरख विधाओं ने हिंदी गद्य साहित्य को समृद्ध बनाया है, उनमें प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं- जीवनी, संस्मरण,डायरी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रा वृत्तांत, आत्मकथा आदि।

वाक्यों में बँधी ऐसी रचना, जो विचार प्रधान हो गद्य कहलाती है । गद्य में बिना चमत्कार या अतिरिक्त प्रयास के हमारी चेष्टाएँ, हमारे मनोभाव, हमारी कल्पनाएँ, हमारी चिन्तनशीत मनः स्थितियाँ सुगमतापूर्वक, सहज- स्वाभाविक रूप से व्यक्त की जाती हैं । गद्य में बुद्धि तत्व की प्रधानता होती है । इसमें चिंतन-मनन, तर्क-वितर्क ,विवेचना आदि की प्रधानता होती हैं । गद्य की प्रमुख विधाएँ नाटक, एकांकी नाटक, उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, कहानी नई कहानी, निबन्ध, आलोचना आदि विधाएँ हैं। इनके अतिरिक्त नवीन विधाओं में गद्यगीत, रेखाचित्र, संस्मरण, इण्टरव्यू, यात्रावृत, आत्मकथा, जीवनी, पत्र, रिपोर्ताज आदि हैं।

विश्व का प्रत्येक साहित्य गद्य साहित्य समाहित है जिसके अंतर्गत विभिन्न रुचियों के लेखक गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं से जुड़कर लेखन कार्य करते हैं। हिंदी गद्य साहित्य में भी अनेकों महत्वपूर्ण विधाऐं हैं जिनका सम्बन्ध गद्य लेखन की विशिष्ट शैलियों से है। निबंध, नाटक, उपन्यास, पत्र, जीवनी, आत्मकथा,

एकांकी, रेखाचित्र एवं संस्मरण, रिपोर्ताज आदि हैं। वर्तमान में हिंदी गद्य साहित्य की प्रत्येक विधा प्रासंगिक है और साथ ही महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. फ्रांसेस्का ओरसिनी, 'दि हिंदी पब्लिक स्फीयर: 1920-1940', लंदन यूनिवर्सिटी, 1996
2. इरा शर्मा, 'दि लघुकथा: ए हिस्टोरिकल एंड लिटरेरी एनालिसिस ऑफ़ ए मॉडर्न हिंदी प्रोज जेन्र', जनवरी 2003
3. गुज़ेल स्ट्रेलकोवा, 'अननोवेबल और कम्प्रेहेंसिबल- टू एटिट्यूड्स टु लाइफ एंड डेथ इन मॉडर्न हिंदी प्रोज', ओरिएंटालिया सुएकाना LX (2011)
4. श्रीमती गायत्री औदिच्य, 'हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा-साहित्य: समीक्षात्मक आकलन', कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, 2015
5. https://www.wikiwand.com/hi/%E0%A4%86%E0%A4%A7%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%95_%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%97%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%87%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B8